

---

# Dhanyashtakam

धन्याष्टकम्

## Document Information

---

Text title : Dhanyashtakam 1

File name : dhanyaa8.itx

Category : aShTaka, shankarAchArya, vedanta

Location : doc\_z\_misc\_shankara

Transliterated by : Sorin Suciu aka SeSe at sorins at hotmail.com

Proofread by : Sorin Suciu aka SeSe at sorins at hotmail.com Manda Krishna Srikanth, Peter Griffiths, Sunder Hattangadi

Latest update : March 19, 2011, September 17, 2013

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

धन्याष्टकम्



(प्रहर्षणीवृत्तम् -)

तज्ज्ञानं प्रशमकरं यदिन्द्रियाणां  
तज्ज्ञेयं यदुपनिषत्सु निश्चितार्थम् ।  
ते धन्या भुवि परमार्थनिश्चितेहाः  
शेषास्तु भ्रमनिलये परिभ्रमन्तः ॥ १ ॥

(वसन्ततिलकावृत्तम् -)

आदौ विजित्य विषयान्मदमोहराग-  
द्वेषादिशत्रुगणमाहतयोगराज्याः ।  
ज्ञात्वा मतं समनुभूयपरात्मविद्या-  
कान्तासुखं वनगृहे विचरन्ति धन्याः ॥ २ ॥

त्यक्त्वा गृहे रतिमधोगतिहेतुभूताम्  
आत्मेच्छयोपनिषदर्थरसं पिबन्तः ।  
वीतस्पृहा विषयभोगपदे विरक्ता  
धन्याश्चरन्ति विजनेषु विरक्तसङ्गाः ॥ ३ ॥

त्यक्त्वा ममाहमिति बन्धकरे पदे द्वे  
मानावमानसदृशाः समदर्शिनश्च ।  
कर्तारमन्यमवगम्य तदर्पितानि  
कुर्वन्ति कर्मपरिपाकफलानि धन्याः ॥ ४ ॥

त्यक्तवईषणात्रयमवेक्षितमोक्षमर्गा  
भैक्षामृतेन परिकल्पितदेहयात्राः ।  
ज्योतिः परात्परतरं परमात्मसंज्ञं  
धन्या द्विजारहसि हृद्यवलोकयन्ति ॥ ५ ॥

नासन्न सन्न सदसन्न महसन्नचाणु  
न स्त्री पुमान्न च नपुंसकमेकबीजम् ।

यैर्ब्रह्म तत्सममुपासितमेकचित्तैः  
धन्या विरेजुरित्तरेभवपाशबद्धाः ॥ ६ ॥

अज्ञानपङ्कपरिमग्नमपेतसारं  
दुःखालयं मरणजन्मजरावसक्तम् ।  
संसारबन्धनमनित्यमवेक्ष्य धन्या  
ज्ञानासिना तदवशीर्य विनिश्चयन्ति ॥ ७ ॥

शान्तैरनन्यमतिभिर्मधुरस्वभावैः  
एकत्वनिश्चितमनोभिरपेतमोहैः ।  
साकं वनेषु विजितात्मपदस्वरूपं  
तद्वस्तु सम्यगनिशं विमृशन्ति धन्याः ॥ ८ ॥

(मालिनीवृत्तम् -)  
अहिमिव जनयोगं सर्वदा वर्जयेद्यः  
कुणपमिव सुनारीं त्यक्तुकामो विरागी ।  
विषमिव विषयान्यो मन्यमानो दुरन्तान्  
जयति परमहंसो मुक्तिभावं समेति ॥ ९ ॥

(शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् -)  
सम्पूर्णं जगदेव नन्दनवनं सर्वेऽपि कल्पद्रुमा  
गाङ्गं वरि समस्तवारिनिवहः पुण्याः समस्ताः क्रियाः ।  
वाचः प्राकृतसंस्कृताः श्रुतिशिरोवाराणसी मेदिनी  
सर्वावस्थितिरस्य वस्तुविषया दृष्टे परब्रह्मणि ॥ १० ॥  
॥ इति श्रीमद् शङ्कराचार्यविरचितं धन्याष्टकं समाप्तम् ॥

Encoded and proofread by Sorin Suciú aka SeSe at sorins at hotmail.com  
Proofread by Peter Griffiths and Sunder Hattangadi

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

